thearyasamaj.org

[redacted]

RNI ... 81/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 71 अंक : 43
सृष्टि संवत् 1960853115
1 फरवरी 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-71, अंक : 43, 29/1 फरवरी 2015 तदनुसार 19 माघ सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तत्वदर्शी तेरी शोभा से अमृत धारते हैं

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरू दधाना अमृतं सपन्त।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः।।

-ऋ. 5/3/4

शब्दार्थ-देव हे देव! दिव्यगुणयुक्त आत्मन् ! **सुदृश**= भली प्रकार देखने वाले, भलाई को देखने वाले, तत्वदर्शी **देवाः** = विद्वान **तव**= तेरी **श्रिया**= शोभा से **पुरू** = बहुत-कुछ **दधानाः**=धारण करते हुए **अमृतम्** = मोक्ष को **सपन्त**= प्राप्त करते हैं। **मनुष**= मननशील **उशिजः**= मोक्षाभिलाषी **आयोः**= मनुष्य के **शंसम्** = गुणों का **दशस्यन्तः** = उपदेश करते हुए **होतारम्** = महादानी **अग्रिम्**= जगन्नायक भगवान के पास **निषेदुः**= निरन्तर बैठते हैं।

व्याख्या= इस मंत्र में मुक्ति-प्राप्ति तथा उसके साधनों का थोड़ा सा संकेत है। वेद कहता है मुक्ति से पूर्व बहुत-कुछ धारण करना होता है। **पुरू दधाना अमृतं सपन्त**= बहुत-कुछ धारण करते हुये मुक्ति प्राप्त करते हैं।

शास्त्र में मुमुक्षा=मोक्ष की इच्छा से पूर्व विवेक, वैराग्य और षट्कसम्पत्ति की प्राप्ति आवश्यक बतलाई गई है।

विवेक- सत्यासत्य के भेद-ज्ञान, आत्मा-अनात्मा के भेद-ज्ञान को कहते हैं, तीनों शरीरों, पांचों कोषों से आत्मा को भिन्न जानना विवेक है। विवेक के कारण शरीर के विषयों से विरक्ति का नाम वैराग्य है। **षट्कसम्पत्ति**-शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान का नाम है। अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटा कर धर्माचरण में सदा प्रवृत्त रखना शम है। श्रोत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कर्मों से हटा कर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना दम है। दुष्ट कर्म वाले मनुष्यों से सदा दूर रहना उपरति है। चाहे निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ कितना ही क्यों न हो, परन्तु हर्ष शोक छोड़ मुक्ति साधनों में सदा लगे रहना तितिक्षा है। वेदादि सत्य शास्त्रों और उनके बोध से पूर्ण आप्त विद्वान सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना श्रद्धा है। चित्त की एकाग्रता समाधान है। इनके बाद मुमुक्षा का स्थान है। इसी प्रकार श्रवण, मनन, निदिध्यासन तथा दर्शन भी मुक्ति प्राप्ति के आवश्यक साधन हैं।

विद्वानों तथा वेदादि शास्त्रों के उपदेश सुनना तथा पढ़ना श्रवण है। उसमें भी विशेष ब्रह्मविद्या के सुनने में अत्यन्त ध्यान देना चाहिये, क्योंकि यह सब विद्याओं में सूक्ष्म विद्या है। सुनकर एकान्त स्थान में बैठ कर विचार करना और यदि कोई शंका हो तो उसका निवारण करना मनन है। जब सुनने और मनन करने से निःसंदेह हो जाये तब समाधिस्थ होकर उस बात को देखना समझना कि जैसा सुना था, विचार था, वैसा ही है वा नहीं। ध्यान योग से देखना निदिध्यासन है। जैसा पदार्थ का स्वरूप, गुण और स्वभाव हो वैसा याथातथ्य जान लेना दर्शन या साक्षात्कार है।

इसी प्रकार प्रतिदिन कम से कम दो घंटा ईश्वरोपासना भी आवश्यक है। इसी प्रकार के अनेक शुक्ल कर्मों को धारण करने के बाद कहीं मुक्ति मिलती है। इस बात को वेद ने कहा- पुरू दधाना अमृतं सपन्त- बहुत कुछ धारण करते हुये मुक्ति प्राप्त करते हैं।

यह सब-कुछ होकर भी मुक्ति-सुख तो परमात्मा के बिना नहीं मिलता, जैसा कि वेद में कहा है- **न ऋते त्वदमृता मादयन्ते** (ऋग्वेद) तेरे बिना मुक्तों को आनन्द नहीं मिलता।

इसीलिये उत्तरार्ध में कहा है-मननशील लोग महादानी, जगन्नायक भगवान की उपासना करते हैं। ऋषि ने खोल कर कहा कि ब्रह्मलोक अर्थात दर्शनीय परमात्मा में स्थित होके मोक्ष-सुख को भोगते हैं और इसी परमात्मा की जोकि सब का अन्तर्यामी आत्मा है, उपासना मुक्ति प्राप्त करने वाले विद्वान लोग करते हैं।

ऐसे तत्वदर्शी महात्मा दशस्यन्त उशिजः शंसमायो मुक्ति के अभिलाषी होकर मनुष्य के (अथवा मनुष्य को) गुणों का उपदेश करते हैं, अर्थात् मनुष्य को उसके अल्प सामर्थ्य आदि धर्मों का बोध कराके समझाते हैं कि वहीं परमात्मा मुक्ति की व्यवस्था करता तथा सबका स्वामी है और जीव कर्मानुसार सुख-दुख का भोक्ता है। जब तक जीव बन्धन में हैं तब तक अनेक सुख दुखों तथा नाना दुरवस्थाओं तथा दुर्गतियों में ग्रस्त रहता है। जब बन्धन से छूटता है तभी चमकता है। महात्माओं में जो तेज और चमक होती है, वह बाह्य शरीर की नहीं, वरन् अंदर के आत्मा की होती है, अतः मंत्र के प्रारम्भ में कहा है- तव श्रिया देव सुदृशो देवाः हे आत्मदेव ! तत्वदर्शी तेरी शोभा के द्वारा- अथवा हे आत्मदेव देव= इन्द्रियां तेरी शोभा से ही-सुदर्शी अच्छी प्रकार देखने सुनने का काम करती हैं। आओ इस आत्मा की शोभा के दर्शन करें!

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

अब आइए "नर" शब्द का अर्थ देखें। आगे कौन ले जा सकता है ? जो नर हो। न रमते इत नर:, जो फल में आसक्त न हो, लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए मार्ग के प्रलोभन उसे लिप्त न कर सकते हों। जो आसक्त हो गया, वह क्या आगे ले जायेगा ? वह नेता नहीं बन सकता। इसलिए "अग्नि" शब्द जहां नेता के साध्य की घोषणा करता है, वहां "नर" साधन की घोषणा करता है।

नेता कौन है ? जो लक्ष्य की ओर ले चले। नेता कौन बन सकता है ? जो मार्ग के प्रलोभनों में आसक्त न हो। ले चलना साध्य है, आसक्त न होना साधन है। जिस प्रकार इन दोनों शब्दों में उक्त भाव निहित है, इसका विवेचन करना ही मनन और निदिध्यासन है।

वेद से वेद का अर्थ : जो लक्ष्य की ओर जाते हुए फलों में आसक्त नहीं होता, वही नेता है। यह भाव नर शब्द में कहां निहित है। "नृ नये" धातु का अर्थ तो ले जाना मात्र है। फिर प्रलोभन में "लिप्त न होना" कहां से हो गया ? आइए, विचार करें। नर शब्द में आये हुए दोनों अक्षर "न" और "र" पुकार-पुकारकर कह रहे हैं कि ऐ नेता! भूलकर भी 'न होना'। क्या ? लिप्त। 'न' का अर्थ हुआ न होना, 'र' का अर्थ हुआ लिप्त। नर का अर्थ हुआ 'न लिप्त होना', तो नेता कौन है ? जो प्रलोभनों में लिप्त नहीं होता। "न रमते इति नर:" यह अर्थ अवश्य ही नैरुक्त-प्रक्रिया का आश्रय लेकर किया गया है, परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि इस अर्थ का कोई आधार नहीं। स्वयं वेद ही इसका आधार है। नर शब्द की यही व्याख्या वेद ने की है। यजुर्वेद (४०।२) में कहा है—"न कर्म लिप्यते नरे।" इसमें से कर्म शब्द को हटाकर देखिए तो वही अर्थ होगा, जो हमने किया है। न लिप्यते इत नर:। नहीं लिप्त करते हैं जिसे, नहीं बांधते हैं जिसे वही नर है। नर पद का अर्थ स्पष्ट होते ही सम्पूर्ण अध्याय का अर्थ स्वत: निर्मल हो जाएगा।

नर किसी भी द्वन्द्व के उपस्थित होने पर विचलित नहीं होगा। अपना आपा नहीं खोयेगा स्थित-प्रज्ञ बना रहेगा। आत्म-अनात्म में, संभूति-असंभूति में, विद्या-अविद्या में, धर्म-अधर्म में, ऋत-अनृत में, किसी में आसक्त न होगा। वह संभूति में भी न रमेगा न आसक्त होगा असंभूति की तो कथा ही क्या ? वह विद्या में भी न रमेगा, (न + र) न आसक्त होगा, अविद्या में रमने की तो कथा ही क्या ? यही सूत्र प्रत्येक द्वन्द्व के उपस्थित होने पर लागू करेगा। अन्यथा तो इस अध्याय के ऋषि ने लिखा ही है—अन्धंतम: प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ संभूत्यां रता:।। ८।। इसी प्रकार अन्धंतम: प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रता:। वे जन घोर अन्धकार को प्राप्त होते हैं, जो असंभूति अथवा अविद्या में रमण करते हैं और वे जन तो उससे भी अधिक अन्धकार को प्राप्त होते हैं जो संभूति अथवा विद्या में रमण करते हैं। यही बात कर्म और अकर्म विषय में है। नर दोनों ही में आसक्त नहीं होता न कर्म में, न अकर्म में; अत: मंत्र चरण में कहा न कर्म लिप्यते नरे। नर व्यक्ति पर कर्म अपना लेप नहीं चढ़ाते। ऐसे अनासक्त नर को कर्म बांधते नहीं क्योंकि नर व्यक्ति कर्म में ही आसक्त नहीं होता, कर्म-फल अथवा कर्म-फल के फल की तो कथा ही क्या ? वह समझता है—अन्धंतम: प्रविशन्ति येऽकर्मण्युपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ कर्मणि रता:।। यह हुआ वेद से वेद का अर्थ।

जन शब्द का अर्थ : एक ही अर्थ के वाचक दो पर्यायवाची शब्दों की क्या विशेषता है, यह आरम्भ में हमने नर और जन शब्दों के अर्थों से स्पष्ट करनी चाही थी। उसमें नर शब्द की व्याख्या हो गई। वेद के नर शब्द का अर्थ वेद से दिया गया। जन शब्द का अर्थ अवशिष्ट है, यह भी वेद से स्पष्ट होना चाहिए।

जन शब्द का स्थूलार्थ हैं प्रजनन द्वारा अस्तित्व में आया हुआ। उसके सामने कोई लक्ष्य नहीं, जो अविद्याग्रस्त कर्महीन जीवन व्यतीत कर रहा हो। जन शब्द की यही व्याख्या स्वयं वेद ने की है। यजुर्वेद (४०।३) में लिखा है—ये के चात्महनो जना:। यहां आया हुआ 'च' पद जन को नर से सर्वथा पृथक् छांट रहा है। नर वह है जो लिप्त नहीं होता और जन वह है जो आत्महनन करता है। सारे अध्याय में इन्हीं दो प्रकार के व्यक्तियों का वर्णन है। नर विद्या की उपासना करते हैं, तो जन अविद्या की। नर संभूति की उपासना में लगे हैं, तो जन असंभूति की उपासना में लगे हुए हैं। नर आत्मज्ञ हैं, तो जन पात्र की हिरण्मयता पर ही मुग्ध हैं। नर निष्काम कर्म करते हैं, तो जन फलासक्त हैं। इस प्रकार यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय (वेद) का अध्ययन नर और जन शब्द को समझ लेने से होगा। हमने यह यथामति स्वाध्याय-विधि पर प्रकाश डाला है। आशा है विज्ञ स्वाध्यायी इस पद्धति का अनुसरण कर स्वाध्याय में प्रवृत्ति होंगे।

तैत्तिरीय उपनिषद् के शिक्षाध्याय के नवम अनुवाक में स्वाध्याय और प्रवचन की महिमा में जो कुछ लिखा है, उससे भी यह ज्ञात होता है कि स्वाध्याय-प्रवचनकर्ता को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। इस नवम अनुवाक में "स्वाध्याय-प्रवचने च" की बारह बार आवृत्ति हुई है। वहां हर आवृत्ति में एक-न-एक तत्त्व को साथ नत्थी कर दिया गया है, यथा—

ऋतञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
सत्यञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
तपश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
दमश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
शमश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
अग्नयश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
अतिथयश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
मानुषञ्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
प्रजा च स्वाध्याय-प्रवचने च।
प्रजनश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।
प्रजातिश्च स्वाध्याय-प्रवचने च।

यहां ऋत, सत्य, तप, दम, शम आदि गुणों को स्वाध्याय और प्रवचन के साथ जोड़ने के दो उद्देश्य हैं। प्रथम तो यह कि ऋत, सत्य, तप आदि करते हुए स्वाध्याय और प्रवचन करे। दूसरे यह कि स्वाध्याय और प्रवचन करते हुए ऋत, सत्य, तप, शम, दमादि नियमों को जाने। जहां ऋत, सत्य, तप आदि को स्वाध्याय का साधन बनाए, वहां स्वाध्याय का साध्य भी इन्हें ही बनाए। स्वाध्याय का फल ऋत की खोज हो, इत्यादि। स्वाध्याय से ऋत नियमों को जाने, स्वाध्याय से सत्य नियमों को जाने। पठन-पाठन का एकमात्र उद्देश्य यही है कि इस विश्व में जितने भी ऋत, सत्य, तप, दम आदि नियम हैं, उनको जाने और उनके ज्ञान से स्वाध्याय को परिष्कृत करे।

सृष्टि उत्पत्ति के विषय में आता है कि अभीद्ध तप से ऋत और सत्य की उत्पत्ति हुई। बस, स्वाध्याय का उद्देश्य यह जानना हो गया कि अभीद्ध तप क्या है, जिससे ऋत और सत्य पैदा हुए। अथर्ववेदीय पृथिवी सूक्त में पृथिवी (राष्ट्र) की धारणात्मिका शक्तियों का वर्णन करते हुए लिखा है, कि सत्य, बृहत्, ऋत, उग्र, दीक्षा, तप, ब्रह्म, यज्ञ ये सात तत्त्व पृथिवी को धारण कर रहे हैं, तो स्वाध्यायशील का कर्तव्य है कि वह यह खोज करे कि पृथिवी को धारण करने वाले ऋत, सत्य, तप आदि तत्त्व क्या हैं ? राष्ट्र को धारण करने वाले ये ऋत, सत्य, तप आदि क्या हैं ? सृष्टि को धारण करने वाले ऋत, सत्य, तप आदि क्या है ?

यही बात उपर्युक्त उपनिषद्-वाक्य में अन्तर्गूढ़ है। वहां जो हर नियम के साथ स्वाध्यायप्रवचने जुड़ा हुआ है, उसका उद्देश्य यही है कि इन नियमों का पालन करते हुए स्वाध्याय करे और स्वाध्याय से इन नियमों को जाने।

ऋत, सत्य, तप: ऋत, सत्य और तप का त्रिक् बहुधा देखने में आता है। इनका परस्पर कुछ सम्बन्ध है। ऋत उन नियमों को कहते हैं जो अपरिवर्तनीय हैं, नित्य हैं, जिनमें कोई परिवर्तन न हो सकता हो। सत्य उस कार्य को कहते हैं, जो ऋत नियमों का परिणाम हो। तप उसे कहते हैं, जो ऋत नियमों को धारण किये रहे; सन्तुलित रखे।

यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगी। प्रकृति का यह अखण्ड नियम है, कि दो गैसों के मिलने से जल का निर्माण होता है। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन ठीक परिमाण में मिलें कि जल बना। बस, इन अखण्ड नियमों को ऋत कहेंगे और उस नियम के आधीन जो कार्यरूप जल बना, वह सत्य है। इस अखण्ड नियम को जो संधारित किये हुए है उसे तप कहते हैं, और जो ऋत, सत्य और तप का प्रयोक्ता है वह ऋत्विज् है।

स्वाध्याय का उद्देश्य है कि इस ऋत, सत्य और तप के सूत्र को जो समस्त कक्षाओं में वितत है, जाने अं. उनका प्रयोग करे। इसी प्रकार शम-दमादि तत्त्वों की स्वाध्याय से संगति करे।

स्वयं ऋषि बने : स्वाध्याय की तैयारी के लिए व्यक्ति को जहां 'नियत:, विधिमास्थित:' होना चाहिए, वहां उसे 'शुचि:' भी होना चाहिए। वह अन्दर-बाहर से पवित्र हो। अन्दर-बाहर से पवित्र व्यक्ति को ऋषि कहते हैं। स्वाध्यायशील व्यक्ति को चाहिए कि वह जिस ग्रंथ का भी स्वाध्याय करे, उसका ऋषि बन जाए। वेदों का स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति के लिए तो यह और भी सरल है, क्योंकि वेद के प्रत्येक मन्त्र पर ऋषि-नाम का उल्लेख है। निस्सन्देह उल्लिखित नाम उन ऋषियों के हैं, जिन्होंने उन-उन मन्त्रों को प्रत्यक्ष किया है। इस नामोल्लेख के दो प्रयोजन हैं—एक तो उन व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता-प्रकाशन और दूसरे इतिहास की सुरक्षा।

(क्रमश:)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

बसंत पंचमी पर्व का संदेश

संस्कृत भाषा में त्यौहारों को पर्व भी कहते हैं। पर्व का दूसरा अर्थ जोड़ होता है, जैसे हमारे शरीर में हड्डियों का जोड़ होता है। जिनके कारण शरीर सीधा होकर गति करता है। इसी प्रकार गन्ने और बाँस में भी जोड़ होते हैं। पौधों को सीधा खड़ा करने के लिए जोड़ होता है। इसी प्रकार हमारे राष्ट्रीय जीवन में यही महत्त्व पर्वों का होता है। जिस प्रकार शरीर में से हड्डियों को निकाल दें तो शरीर न रहकर केवल मांस का लोथड़ा रह जाता है, इसी प्रकार हमारे जीवन में त्यौहारों को निकाल दें तो हमारा जीवन मृत प्राय: रह जाता है। समय-समय पर आने वाले त्यौहार जहां हमारे जीवन में आनन्द उत्साह पैदा करते हैं, वहां सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्वरूपों का दिग्दर्शन कराके हमें अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। हमारे देश में अनेक पर्व आते हैं जिन्हें हम मिलजुल कर आनन्द और उत्साह के साथ मनाते हैं। ऐसे ही प्रेरणा और उत्साह देने वाला बसन्त पंचमी का पर्व भी है। किसी ने ठीक ही कहा है-

है ऋतुराज का आगमन जल-थल में छवि छाई है।
प्रकृति देवी नवले रंग में रंग मञ्च पर आई है।

बसन्त ऋतु के आगमन से जहां दीन दु:खी जन को साहस मिलता है कि हमारा जीवन सकुशल रहेगा, उसके साथ ही प्रकृति में अतुलनीय शोभा का विकास होता है। समस्त भूमि पीली चादर ओढे अपनी मन्द सुगन्ध समीर से जन मानस को आह्लादित कर देती है। वनस्पति जगत में सर्वत्र नवीन परिवर्तन होता दिखाई देता है। बसन्त पंचमी के पर्व का समय ऐसा आनन्द और उत्साह देने वाला होता है कि वायुमण्ड़ल मोद और मद से भर जाता है। दिशाएं कलकण्ठा कोकिला आदि विविध विहंगमों के मधुर आलाप से प्रतिध्वनित हो उठती हैं। क्या पशु, क्या पक्षी और क्या मनुष्य सबका हृदय आनन्द से उद्वेलित होने लगता है। मनों में नई-नई उमंगें उठने लगती हैं। भारत के अन्नदाता किसान अपने दिन रात के परिश्रम को आषाढ़ी फसल के रूप में देखकर फूले नहीं समाते हैं। उनके गेहूं और जौ के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आँखों को तरावट तथा चित्त को अपूर्व आनन्द देती है। कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं।

बसन्त पंचमी का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि जिस प्रकार बसन्त के आने पर सम्पूर्ण प्रकृति में हलचल दिखाई देती है और उसमें परिवर्तन होता है, नव संचार होता है, चारों ओर फूल खिलने लगते हैं, उसी प्रकार हमारे मनुष्य जीवन में भी परिवर्तन होना चाहिए। हमारे जीवन में भी आनन्द और उत्साह का संचार होना चाहिए। अपनी कमियों और त्रुटियों को दूर करके उसमें सद्गुणों का संचार करना चाहिए। अगर जड़ प्रकृति ऋतुओं के अनुसार अपने में परिवर्तन कर सकती है तो हम तो चेतन प्राणी हैं। हम चेतन होकर भी अगर अपने अन्दर परिवर्तन नहीं करते, बदलाव नहीं लाते तो हमारा चेतन होने का क्या लाभ?

बसन्त पंचमी का दिन जहां ऋतु परिवर्तन की दृष्टि से अपना महत्व रखता है वहां अपने साथ एक महा बलिदानी, धर्मनिष्ठ भारतीय वीर की याद ताजा कर देता है। इस बलिदानी वीर का नाम हकीकत राय था, जिसने अपनी छोटी सी आयु में जीवन की हकीकत को समझा था, धर्म के साथ निभाया था और अपनी भारतीय परम्पराओं का मुख उज्जवल किया था। वीर हकीकत के जीवन चरित्र को पढ़ने से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने पूर्वजों के यशस्वी जीवन की प्राणपन से रक्षा करनी चाहिए। किसी में यह साहस न हो कि हमारे पूर्वजों का अपमान कर सके या हमारे धार्मिक सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ा सके। आयु की दृष्टि से वीर हकीकत छोटे थे परन्तु अपने धर्म के प्रति उत्सर्ग का ऊंचा भाव निज बलिदान द्वारा जो प्रस्तुत किया वह किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए अत्यन्त प्रेरणा देने वाला है। वीर हकीकत को डराया गया, धमकाया गया, प्रलोभन दिए गए, अपना धर्म छोड़ने के लिए मजबूर करने की कोशिश की गई परन्तु वीर हकीकत उनके भय और प्रलोभन से जरा भी विचलित नहीं हुए। अपना धर्म परिवर्तन करके प्राणों को बचाने की कोई इच्छा प्रकट नहीं की।

धर्म पर बलिदान होने वाले ही धर्म के सच्चे प्रेमी और प्रचारक होते हैं, यह वीर हकीकत ने अपने बलिदान से सिद्ध कर दिया। 14 वर्ष की छोटी आयु होने पर भी जो भाव और श्रद्धा वीर हकीकत के अन्दर थी वह सचमुच प्रेरणादायक है। वीर हकीकत ने गीता के वचनों को सार्थक कर दिया कि। स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मों भयावह:।। अर्थात् अपने धर्म के लिए मर मिटना भी कल्याणकारी होता है, दूसरों के धर्म को अपनाकर हम सुख और शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकते। आज हम थोड़े से भय और प्रलोभन के वशीभूत होकर अपने धर्म को तिलांजलि दे देते हैं। बसन्त पंचमी का पर्व हमें वीर हकीकत के गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है। वीर हकीकत ने अपने बलिदान से हमारा मार्गदर्शन किया है कि चाहे कितने ही कष्ट सहने पड़े, कितनी मुसीबतें सहन करनी पड़े हम अपने मार्ग से, अपने कर्त्तव्य से, अपने धर्म से कभी भी मुंह न मोड़े।

बसन्त पंचमी का पर्व मनाते हुए हम भी अपने अन्दर उत्साह और आनन्द का संचार करें। प्रकृति के साथ-साथ अपने जीवन में भी परिवर्तन करें। पर्वों के द्वारा हमारे अन्दर नई प्रेरणा तथा उत्साह पैदा होता है। पर्वों के बिना हमारा जीवन नीरस हो जाता है। नीरस जीवन को सरस बनाने के लिए हम सभी मिलजुल कर आनन्द और उत्साह के साथ अपने पर्वों को मनाएं। बसन्त पंचमी का पर्व भी ऐसा ही प्रेरणादायक तथा आनन्द और उत्साह को बढ़ाने वाला पर्व है। इस पर्व को मनाते हुए हम जहां प्रकृति के अनुसार अपने जीवन में परिवर्तन करें वहीं वीर हकीकत राय के गुणों को धारण करके अपनी संस्कृति, सभ्यता और धर्म की रक्षा करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

सुन्दरगढ़ जिले के गेलेईबाहाल ग्राम के 120 परिवारों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली

पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी संचालक गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं ''प्रधान'' उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा एवं सहयोग से 14 दिसम्बर को गेलेईबाहाल ग्राम में वैदिक धर्म की दीक्षा के भव्य कार्यक्रम में 120 परिवारों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य पूज्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती जी के करकमलों से ओ३म् ध्वजा उत्तोलन के साथ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ एवं दीक्षा के कार्यक्रम का संचालन श्रद्धेय वा. विशिकेशन जी शास्त्री ने किया। इस यज्ञ में 120 ईसाई परिवारों ने आहुति देकर वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की। इस आयोजन में सभा के प्रचारक श्री परमानन्द जी आर्य एवं प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री वासुदेव होता एवं श्रीकान्त जी का भी सराहनीय सहयोग रहा। इस अवसर पर स्वामी व्रतानन्द जी ने 120 नये कम्बल तथा 120 साड़ी निर्धन परिवार के स्त्री-पुरुषों को वितरण की। अन्त में हजारों लोगों के द्वारा प्रीतिभोज में प्रसाद ग्रहण करने के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-रणजीत जी विवित्सु

thearyasamaj.org

गाय, गंगा, गायत्री की अन्यों से विशेष मान्यता क्यों ?

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड कोलकत्ता

गाय, गंगा, गायत्री, ये तीनों अपने-अपने स्थान पर सब से श्रेष्ठ, सर्वोत्तम सर्वोच्च हैं। इनको हिन्दू धर्म यानि वैदिक धर्म में बहुत बड़ा महत्व ही नहीं बल्कि पूज्य माना गया है। हिन्दू धर्म ने जिन-जिन को मान्यता दी है, वह उनके गुणों व उसके महत्व को देख कर दी है। जैसे वृक्षों में पीपल, पौधों में तुलसी, पशुओं में गाय, पक्षियों में हंस, पहाड़ों में हिमालय, नदियों में गंगा, वैदिक मन्त्रों में गायत्री। इन सब के पीछे इनके गुणों का पूरा इतिहास छिपा हुआ है। हम यहाँ केवल गाय, गंगा व गायत्री की मान्यता क्यों है, इसका संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

१-गाय : गाय को ईश्वर ने मनुष्य जाति को एक पशु के रूप में जैसे अन्य पशु भैंस, घोड़ा, बकरी, हाथी दिया है वैसे नहीं दिया बल्कि एक उपहार के रूप में दिया है, जिसको देकर ईश्वर ने मनुष्य जाति पर बड़ा उपकार किया है। कारण गाय मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा साथी या सहयोगी है जिससे मनुष्य अपने जीवन को उन्नत व समृद्धिशाली बनाता है, जिसके कारण वह अपने मन, बुद्धि, शरीर व आत्मा को बलिष्ठ तथा पवित्र बनाता है। गाय से उत्पन्न सभी पदार्थ ही नहीं बल्कि गाय का रोम-रोम मनुष्य के लिए लाभकारी है। गाय एक चलती-फिरती फैक्टरी है जिसका उत्पादन सस्ता व सुलभ है। कम परिश्रम में अधिक लाभ, गाय मनुष्य को देती है। गाय से अनेक लाभ हैं जिनमें कुछ लाभ यहाँ लिखते हैं।

गाय के दूध, घी, मक्खन व पनीर से अनेकों किस्म की मिठाईयां बनती हैं जिनको खाकर मनुष्य स्वयं आनन्दित होता है तथा अपने अतिथियों व बरातियों को भी आनन्दित करता है। गाय के गोबर व मूत्र से उच्चतम् खाद बनती है, जिससे उत्पन्न हुआ अनाज स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है और जमीन भी उर्वरा होती है। केमिकल से बनी यूरिया खाद से गाय के गोबर व मूत्र से बनी जैविक खाद कहीं अच्छी होती है। यूरिया खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति हर साल कम होती जाती है जब कि जैविक खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती जाती है। जब से भारत में यूरिया खाद का प्रयोग होने लगा है तभी से मात्रा में चाहे अनाज अधिक पैदा होने लगा हो परन्तु स्वादिष्ट व गुण युक्त न होने से भारतीयों का स्वास्थ्य कमजोर हुआ है। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। यहाँ की ७०. जनता गाँवों में रहकर कृषि करती है। देश में जब से यूरिया खाद का प्रयोग अधिक करने में और जैविक खाद का प्रयोग बढ़ाने में हुआ है। ईश्वर की कृपा बनी रही तो भविष्य में इस भावना को बल मिलेगा। इसके अलावा गाय के गोबर व मूत्र से कई प्रकार के सामान बनते हैं। जिनमें साबुन, सैम्पो, अगरबत्ती व फिनाईल आदि मुख्य हैं। गाय के गोबर व मूत्र से कई किस्म की दवाईयाँ बनती हैं, यहाँ तक कि कैन्सर की दवाई भी बनती है। इनसे बनी दवाईयाँ काफी उपयोगी सिद्ध हुई हैं। गाय का मूत्र नित्य सेवन करने से मनुष्य काफी बिमारियों से बच सकता है। यदि हम गो-रक्षा करना चाहते हैं तो हमें गाय द्वारा उत्पादित खाद, सामान तथा दवाईयों का प्रयोग अधिक करना होगा जिससे गाय की उपयोगिता बढ़ेगी। यदि हम एक बूढ़ी गाय या बैल के गोबर और मूत्र का प्रयोग भली भांति करें तो हम बूढ़ी गाय या बैल से नित्य पच्चास रुपये कमा सकते हैं और उनके ऊपर नित्य का खर्च अधिक से अधिक तीस रुपये होगा, इस प्रकार एक बूढ़ी गाय या बैल से हम कम से कम बीस रुपये नित्य कमा सकते हैं। यदि ऐसी व्यवस्था सरकार या संस्थाओं द्वारा हो जाये तो कोई भी किसान उनको कटने के लिए कसाईयों को नहीं बेचेगा, तभी गो-वंश की रक्षा होनी सम्भव है कारण दूध देने वाली गाय और हल चलाने वाले बैल को तो कोई बेचता ही नहीं।

सबसे बड़ी खूबी गाय में यह है कि गाय की चमड़ी में एक ऐसा आकर्षण है कि वह सूर्य की किरणों से एक प्रकार की ऊर्जा खेंचती है और यह ऊर्जा उसके दूध में आने से पीने वालों को बड़ा लाभ होता है। यही कारण है कि गाय के घी में जो एक पीलापन दिखाई देता है, वह सूर्य की किरणों का ही अंश है। गाय के दूध में भी कुछ पीलापन होता है, उसका कारण भी यही है। इस प्रकार गाय अनेक किस्मों से मनुष्य के लिए लाभकारी है, जिसका पूरा विवरण करना भी असम्भव है। ऐसे उपयोगी और लाभकारी पशु को हम काटने के लिए बेच देते हैं। यह मानवता के ऊपर एक बड़ा कंलक है। हमें ऐसे कुकृत्यों से सदा बचना चाहिए। तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी बनेंगे।

२. गंगाः गंगा नदी सब नदियों से अधिक पवित्र व श्रेष्ठ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य है, वह यह है कि इसके पानी नें कभी भी कीड़े नहीं पड़ते जब कि अन्य नदियों के पानी में कीड़े बहुत जल्दी ही पड़ जाते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि गंगा नदी हिमालय पर्वत के गो-मुख से निकल कर हिमालय के अन्दर ही अन्दर कई किस्म की जड़ी-बूटियों से स्पर्श करती हुई आती है, इसलिए जड़ी-बूटियों के प्रभाव से गंगा का पानी इतना पवित्र व रोग विनाशक हो जाता है, जिसमें कीड़ा नहीं पड़ता। पर गंगा में नहाने से सब पाप धुल जाते हैं, यह एक अन्धविश्वास है। गंगा में नहाने से शरीर शुद्ध होता है, पर आत्मा शुद्ध नहीं होती। आत्मा की शुद्धि तो शुभ कर्म करने, आचरण पवित्र रखने तथा ईश्वर की उपासना करने से ही होगी। इसलिए हमें गंगा नदी के प्रति किसी प्रकार का अन्ध विश्वास नहीं पालना चाहिए। कई अन्धभक्त गंगा के पास खड़े होकर हाथ जोड़ते हैं, पैसे फेंकते हैं, यह सब निरर्थक है, केवल एक अन्ध विश्वास है और कुछ नहीं।

3. गायत्रीः वैसे तो वेदों के सभी मन्त्र सार्थक एवं उपयोगी है परन्तु गायत्री मन्त्र अन्य मन्त्रों से अधिक लाभदायक हैं इसीलिए इसको गुरू मन्त्र व महा मन्त्र भी कहा गया है। अन्य मन्त्रों में तो हम किसी में धन-वैभव के स्वामी होने की याचना की है, किसी में अपने दुःखों, दुर्गुणों दुर्व्यसनों को दूर करके अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव की प्राप्ति के लिए याचना की है। किसी में परिवार को सुखी बनाने की याचना की है, परन्तु गायत्री मन्त्र से सुबुद्धि प्राप्ति की याचना की है जो सर्वोत्तम याचना है। सुबुद्धि आ जाने से बाकी सभी चीजें स्वयं ही आ जाती हैं इसलिए गायत्री मन्त्र का अन्य मन्त्रों से अपना अलग ही महत्व है, इसलिए गायत्री मन्त्र को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में अपना एक अलग ही स्थान प्राप्त है।

thearyasamaj.org

स्वाध्याय से जीवनोद्देश्य का ज्ञान व ईच्छित फलों की प्राप्ति

-ले० मनमोहन कुमार आर्य पताः 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून

संस्कृत का 'स्व' ''शब्द विश्व'' के भाषा साहित्य का एक गौरवपूर्ण व महिमाशाली शब्द है। इस शब्द में स्वयं को जानने व समझने की प्रेरणा छिपी है। जिसने ''स्व'' अथवा स्वयं को जान लिया वह जीवन में सफल हुआ कहा जा सकता है। जिसने 'स्व' को न जानकर अन्य सब कुछ भौतिक सुख समृद्धि को पा लिया, लगता है वह घाटे में रहा है। अत: इस महत्त्वपूर्ण शब्द को जानकर इस शब्द से जुड़े अध्ययन जो स्वाध्याय कहलाता है, विचार करते हैं।

स्वाध्याय शब्द 'स्व' शब्द की तरह अति गरिमा एवं महिमापूर्ण शब्द है। इसमें स्वयं वा अपने आप का अध्ययन करने की प्रेरणा व सन्देश निहित है। यह एक प्रकार से 'मनुर्भव' का ही पूरक व पर्यायवाची शब्द लगता है। हम मनुर्भव अर्थात् मननशील कब बनेंगे कि जब हम स्वाध्याय कर यह जान पायेंगे कि हम वस्तुत: व स्वरूपत: कौन हैं और हमारे जन्म व जीवन का उद्देश्य क्या है ? यदि हम स्वयं को जान ही नहीं पाये तो मनुष्य बनना कठिन ही नहीं असम्भव है। स्वाध्याय से हमें स्वयं को जानने की प्रेरणा तो मिल गई, अब इस अनुष्ठान को अंजाम कैसे दिया जाये। इसके लिए हमें एक गुरु या मार्गदर्शक की आवश्यकता है जो हमें पहले वर्णमाला का उच्चारण करने और मातृभाषा को लिपि में लिखने व उसे समझने के योग्य शिक्षा दे। यह कार्य कुछ ही दिनों में आसानी से हो जाता है। साक्षर एवं भाषा को पढ़ने व लिखने की योग्यता आ जाने पर स्वाध्याय का रास्ता खुल जाता है और हम मनचाही व अपने गुरुओं, ज्ञानियों, योगियों व समाज के सज्जन विद्वान पुरुषों के बतायें हुए मार्ग को जान कर उसका अनुगमन कर सकते हैं। स्वाध्याय एक ओर जहां ईश्वर व जीवात्मा से सम्बन्धित साहित्य का होता है वहीं अन्य अनेकानेक विषयों का भी हो सकता है। ईश्वर व आत्मा के क्षेत्र में भिन्न प्रकार के ग्रन्थ व मान्यतायें पढ़ने को मिलती हैं। इन्हें दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। एक ऐसी मान्यतायें जो वेद व सत्य से पुष्ट होती हैं और दूसरी जो वैदिक मान्यताओं से भिन्न हैं जिन्हें अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि कहते हैं। इसमें अन्तर करना विवेकशील ज्ञानी पुरुषों के लिए भी सम्भव है। वैदिक मान्यतायें कौन सी हैं, तो यहां भी इसके भेद हो जाते हैं। एक तो वह हैं जो वेदों की हमारे ऋषि-मुनियों ने अपने ग्रन्थों उपनिषद व दर्शनों आदि में दी हैं और उन्नीसवीं शताब्दी में जिनका उल्लेख, वर्णन, विस्तार व समर्थन महर्षि दयानन्द ने वेद प्रमाणों, युक्तियों आदि से किया है। इसके लिए सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सहित महर्षि दयानन्द के सभी ग्रन्थ व उनका वेद भाष्य एवं 11 उपनिषद तथा दर्शन ग्रन्थ आदि सम्मिलित हैं। पुराणों व अन्य मतों के ग्रन्थ पढ़ने से भ्रान्ति होने की पूरी-पूरी सम्भावना है क्योंकि इन सब ग्रन्थों में सत्य और असत्य मान्यताओं का मिश्रण हैं और अप्रमाणिक, काल्पनिक या असत्य कहानी किस्से हैं। ईश्वर के बारे में यदि जानना है तो वह सत्य, चित्त, आनन्द स्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्त्ता सिद्ध होता है। इसी प्रकार से आत्मा एक अति सूक्ष्म तत्व, आंखों से न दिखने वाला, शरीर में विद्यमान होकर शारीरिक क्रियाओं द्वारा इसका प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, यह अनादि, अजन्मा, अविनाशी, अमर, नित्य, एकदेशी, अल्पज्ञ, कर्मों का कर्ता और भोक्ता, अपने संचित कर्मों व प्रारब्ध के अनुसार जन्म-मरण धारण करने वाला पदार्थ है। ईश्वर जीवात्माओं को कर्मानुसार जन्म देता है और जीवों के लिए सृष्टि बनाता है और 4.32 अरब वर्षों की अवधि पूर्ण होने पर प्रलय करता है। जो जीव अच्छे कर्म करते हैं व वेदानुसार जीवन व्यतीत करते हैं उनके कर्मों का भोग पूरा हो जाने एवं योग समाधि से ईश्वर का साक्षात्कार कर लेने पर जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। वेद व वैदिक साहित्य के अतिरिक्त जिन अन्य प्रकार के साहित्य का मनुष्य अध्ययन करता हैं उन-उन विषयों का उसे ज्ञान होता है जिसका उपयोग कर उन विषयों के ज्ञान व क्रियाओं से होने वाले लाभों को वह प्राप्त कर सकता है। अत: सभी प्रकार के सत्य साहित्य का अध्ययन करना चाहिये। किसी भी साहित्य मुख्यत: धार्मिक साहित्य को आंख बन्द कर अन्धी श्रद्धा व अन्धी आस्था का दास बनकर नहीं पढ़ना चाहिये। सत्य की खोज करनी चाहिये और तर्क बुद्धि से सत्य व असत्य का निर्णय कर सत्य को स्वीकार और असत्य का तिरस्कार स्वयं भी करना चाहिये और दूसरों को भी समझा कर कराना चाहिये।

स्वाध्याय के बारे में हमारे शास्त्रकारों ने इसे नित्य कर्म में सम्मिलित किया गया है। स्वाध्याय का प्रमुख ग्रन्थ तो वेद और वैदिक साहित्य ही है। वेद विद्या के ग्रन्थ हैं। विद्या उसे कहते हैं जो बन्धनों से, जो दु:ख और पुनर्जन्म का कारण होते हैं, मुक्ति दिलाती है। मुक्ति ज्ञान से होती है अत: विद्या का मुख्य प्रयोजन सभी विषयों का सत्य-सत्य ज्ञान होता है। प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक घंटा तो नियमित स्वाध्याय करना ही चाहिये। हमारा अनुमान है कि एक घंटे में व्यक्ति किसी ग्रन्थ के 15 पृष्ठ पूर्ण तल्लीन होकर पढ़ सकता है। इस प्रकार से एक वर्ष में 5,475 पृष्ठ पढ़े जा सकते हैं। इन पृष्ठों में हम सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, पंचमहायज्ञ विधि, 11 उपनिषद् व 6 दर्शन पढ़ सकते हैं। इसके बाद एक वर्ष में इतने ही पृष्ठ और पढ़े जा सकते हैं जिसमें चार वेदों का अध्ययन पूरा किया जा सकता है। शेष जीवन में इसी प्रकार से अन्य उपयोगी साहित्य पढ़ा जा सकता है। अत: स्वाध्याय का स्वभाव सभी व्यक्ति को अपने अन्दर उत्पन्न करना चाहिये। इससे हानि तो कुछ नहीं होगी परन्तु लाभ अनेकों हैं जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। शास्त्रों में स्वाध्याय की महत्ता अथवा लाभ बताते हुए कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति सारी पृथिवी को रत्नों से ढक कर दान कर दे तो भी उसको वह फल प्राप्त नहीं होता जो कि एक सुविधापूर्वक स्थिति में नियमित स्वाध्याय करने वाले को प्राप्त होता है। हमें लगता है कि स्वाध्याय से इस जन्म में तो लाभ होता ही है इसके साथ स्वाध्याय से जो संस्कार बनते हैं वह सभी हमारे अगले जन्म में भी हमें प्राप्त होते हैं। स्वाध्याय से इस जन्म में भी शारीरिक बौद्धिक व आत्मिक उन्नति होती है और अगले जन्म में भी। स्वाध्याय करते हुए हम ईश्वर, जीव व सृष्टि के स्वरूप को भली भांति जानकर उससे लाभ उठा सकते हैं। स्वाध्याय करने से पाप से बचा जा सकता है और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को जानकर उसे प्राप्त भी किया जा सकता है। हम तो कहेंगे कि स्वाध्याय व्यक्ति का ऐसा धन है जिसके सामने अन्य सभी भौतिक धन तुच्छ है। इसी कारण प्राचीन काल से हमारे देश में धन कुबेरों की पूजा व स्तुति न होकर सर्वस्व त्यागी ज्ञानवान समाज के सर्वहितकारी साधुओं की पूजा व सम्मान किया जाता था। यही सच्चे ज्ञानी परोपकारी साधु-महात्मा ही सच्चे तीर्थ कहलाते थे न कि आजकल के गंगा-स्नान, बद्रीनाथ व अन्य स्थान आदि। वैराग्य की परिभाषा भी यही है कि ज्ञान की पराकाष्ठा। यह पराकाष्ठा स्वाध्याय से ही प्राप्त की जा सकती है। इससे वैराग्य होगा जिसका अर्थ है कि भौतिक पदार्थों व अपने सम्बन्धियों से राग नहीं रहेगा। इस स्थिति के बनने पर मन स्वत: ईश्वर की शरण में जायेगा व उसमें लगेगा और ईश्वर की कृपा से ईश्वर प्राप्त होगा। यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। आईये, नियमित स्वाध्याय का व्रत लें और अपने जीवन को पूर्ण उन्नत बनायें।

thearyasamaj.org

आर्य बनने के सिद्धान्त

-ले० जनकरानी आर्य लुधियाना

1. जो धन सत्य कर्म में लगा, तन परोपकार में, मन प्रभु भजन में, बुद्धि आत्म चिन्तन में वही आर्य धन्य है।

2. यज्ञ से सुगन्धि होती है ऐसे ही हमारे जीवन में भी सुगन्धि होनी चाहिए।

3. सत्संग आत्म परीक्षण, आत्मा निरीक्षण के लिए उत्तम है। सत्संग को चबाना चाहिए निगलना नहीं अगर निगलोगे तो आत्मा कष्ट में रहेगा।

4. दुष्ट के साथ स्वर्ग भी नरक है सत्संग के साथ नरक भी स्वर्ग सारा संसार शान्ति ढूंढता है, कितना आश्चर्य है हृदय में हृदेश है वहां हम देखते नहीं शान्ति का भंडार हमारे आत्मा के पास है।

5. प्रभू को पाने के लिए प्रभू पर अटल विश्वास, मिलने की उत्कट इच्छा आवश्यक है प्रभू से बड़ा कुछ नहीं, वेद ज्ञान से उत्तम कुछ नहीं, यज्ञ से बड़ा कुछ नहीं, प्रभु से प्यार हो जाए इससे बड़ा भाग्य कोई नहीं।

6. प्रभु का प्यारा बनने के लिए सबके प्यारे बनो, प्यार करो प्यार करो उधर से रहमत होगी।

7. अपराध को छिपाना नहीं चाहिए जैसे बीज को धरती में दबा दे तो वो उगता है अपराध छिपाने से बढ़ता है।

8. इन्सान रस का लोभी है परमात्मा सदा रस वान है, कहीं से रस आ रहा तभी मानव जी रहा है।

श्रृंगार रस- यह रस प्रभु का फूल फलों से सजा यह जग देखें
हास्य रस- सदा मुस्कराते रहने का यत्न।
रौद्र रस- प्रभु आचंभित कर देता है।
भयानक रस- विस्मित होना डर जाना।
वात्सल्य रस- बालक के प्रति मां की ममता देखो।
विस्मय रंग- प्रभु की दुनियां के अद्भुत कारनामे देखो।
ज्ञान रस- ज्ञान का आनन्द लो।
करूणारस- दुखी पर दया कर आत्म संतुष्टि मिलेगी।
इन रसों से तृप्त होकर प्रभु के रस को पा सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज धूरी में दिनांक: 23-12-2014 दिन मंगलवार को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रधान प्रहलाद आर्य की अगवाई में व महाशय प्रतिज्ञापाल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्व प्रथम पं. शैलेश शास्त्री ने विशेष यज्ञ करवाया। शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपना विचार प्रस्तुत किये उपनिषद के निम्न मंत्रों को सुनाया।

नायमात्मा प्रवचन लभ्यो न मेध्या न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुतेनलभ्यस्तुस्यैष आत्मा विवृणुते तनू स्वाम्।।

परमात्मा की प्राप्ति भाव भरे प्रवचनों को सुनने से नहीं होती और न बहुश्रुत होने से या तीव्र मेधा को प्राप्त करने से परमात्मा तो जिसे अपने भक्त के हृदय में वरण कर लेता है, उसी के समक्ष अपने स्वरूप का प्रकाश करता है। आर्य स्कूल व यश चौधरी मॉडल स्कूल के छात्राओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के प्रति भजन प्रस्तुत किये। मंच का संचालन करते हुए मंत्री राम पाल आर्य ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि दी तथा तीनों संस्थाओं के अध्यापक अध्यापिका ने भी श्रद्धांजलि दी।

आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य ने आये हुए सभी लोगों को धन्यवाद किया और बताया कि ऐसे महान पुरुष हमें श्रेष्ठ बनने के लिए हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर आर्य समाज के कार्यकारणी प्रधान वीरेन्द्र कुमार गर्ग, संरक्षक प्रतिज्ञा पाल जी, यश चौधरी स्कूल के मैनेजर सतीश पाल आर्य, आर्य कालेज के मैनेजर पवन कुमार गर्ग, अशोक जिन्दल कैसियर, आर्य स्कूल के प्रिसिपल बी.एल. कालिया, मोनिका वातस, सोम प्रकाश आर्य, रमेश आर्य, रघुनाथ शर्मा, धर्म देव मोमन, ललित कुमार, डा. एस.के. सरीन, एवं आर्य समाज के सदस्य व अधिकारी गण इस अवसर पर उपस्थित होकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धा सुमन श्रद्धांजलि दिये।

-रामपाल आर्य मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज जाम नगर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जामनगर का 88वां वार्षिक उत्सव भव्य रूप में हर्षोल्लास के साथ दिनांक 20-12-14 से 23-12-14 तक मनाया गया। चतुर्वेद कथा 20-12-14 को प्रात: 8 बजे प्रारम्भ किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ. श्री छवि कृष्ण आर्य जी का सन्मान समाज के मंत्री श्री डॉ. अविनाश एम भट्ट जी ने तिलक फूल हार द्वारा किया। और टंकारा से आये वेद पाठी ब्रह्मचारियों का सन्मान यज्ञ के मुख्य यज्ञमान श्री तपन भाई भट्ट निर्भय भट्ट जी ने किया। वेद कथा के प्रवक्ता डॉ. श्री आचार्य छवि कृष्ण जी ने अनेक प्रासांगिक मन्त्रों की व्याख्या सरल भाषा में यज्ञ का मध्य और अन्य में सभी उपस्थित आर्यजन यज्ञमानो को किया। तथा टंकारा के ब्रह्मचारीयों ने यज्ञ के पश्चात् ईश्वर भक्ति, ऋषि भक्ति भजनों से प्रात: सायं संगीतमय वातावरण बनाया।

आर्य समाज जामनगर द्वारा ज़िला स्तर के कन्याओं की वक्तव्ता स्पर्धा का आयोजन किया। जिसमें तीन स्तर की प्रतियोगिता रखी थी। प्राथमिक-स्वामी श्रद्धानन्द जीवन झरमर स्वच्छता में प्रभुता। द्वितीय-महर्षि दयानन्द के नारी जाति पर उपकार, पर्यावरण और विकास। तृतीया-वैदिक धर्म आज का एक मात्र आधार, वैश्विक क्षेत्र आज का भारत आदि विषय थी। कुल 40 कन्याओं ने भाग लिया। आर्य समाज द्वारा सभी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्रदान किया। तथा प्रथम, द्वितीय और तृतिय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को सिल्ड, रुपया और प्रमाण पत्र से सन्मान श्री दयानन्द कन्या विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती हर्षा बहन और श्रीमती स्वाती बहन जी ने किया।

तथा बृहत सौराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य समाज जामनगर के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। समारोह में गुजरात प्रान्तिय सभा के महामंत्री श्री हसमुख भाई परमार बृहत सौराष्ट्र के मंत्री श्री रञ्जित परमार, टंकारा गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी शास्त्री, जामनगर ज़िला के मेयर तथा अनेक आर्य बन्धु उपस्थित थे। अनेक वक्ताओं ने अपने हृदय की भावना से स्वामी जी को श्रद्धांजली दी।

समारोह के अन्त में समाज के मंत्री श्री अविनाश एम भट्ट जी ने वेद कथा के ब्रह्मा, वेद पाठीयों, यजमानों तथा श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित सभी आगन्तुक महानुभावों का आभार व्यक्त किया तथा मंत्री श्री के पिता जी स्वा.डा. श्री मगन भाई भट्ट जी के जन्म शताब्दी में उनके परिवार जन ने पूरे वर्ष 7 अनेक स्थानों में होमिपेथीक निदान केम्प, नि:शुल्क कराया है। जिसमें हजारों व्यक्तियों को लाभ मिला। एक महीने का दवाई खर्च सभी को दिया गया। और उत्सव के सारे खर्च उन्हीं परिवार ने आर्य समाज को दान में प्रदान किया।

गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से सोनाबेड़ा अभयारण्य के निर्धन वृद्ध आदिवासी महिला एवं पुरुषों को कम्बल बांटे गये

गत 22-23 दिसम्बर को गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल के ब्र. कृष्णदेव, ब्र. केशव एवं कु. धनेश्वरी कु. सुमेधा को साथ लेकर गये सोनाबेड़ा अभयारण्य के निर्धन स्त्री पुरुषों को नीचे लिखे ग्रामों में कम्बल बांटे गये। इस कम्बल बांटने के पुनीत कार्य में माता परमेश्वरी देवी कन्या छात्रावास की प्रबन्धक सुश्री लता आर्या एवं उस इलाके के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री विजय आर्य ने महत्वपूर्व सहयोग दिया।

ग्रामों की सूची- १. अड़ार, २. धाकली, ३. खड़ाग, ४. जुनापाली, ५. सेन्दवादी, ६. छीनमुण्डी, ७. देउलपाडा, ८. कोढराबेड़ा, ९. सालेपड़ा, १०. सीलेट, ११. खनरार, १२. जलमड़ेई, १३. सोनाबेड़ा। कम्बल पाने वाले महिला-पुरुष बहुत खुश हुए। गुरुकुल परिवार को खुलकर आशीर्वाद देते रहे।

-आ. मनुदेव वाग्मी

thearyasamaj.org

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना में मकर संक्रान्ति पर्व सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना में दिनांक 14-1-2015 को मकर संक्रान्ति का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व का शुभारम्भ पवित्र गायत्री यज्ञ से किया गया। यज्ञ पुरोहित कर्मवीर शास्त्री जी ने करवाया। एक गायत्री मन्त्र की माला करके बृहद यज्ञ किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री राजेश मरवाहा अनीता मरवाहा, श्री सुरेन्द्र टंडन किरन टंडन, अरूण सूद सविता सूद तथा बहुत सी बहनों ने भी यजमान पद को सुशोभित किया। 3 यज्ञकुण्ड़ों पर चारों तरफ यजमान बड़ी श्रद्धा से बैठे। यज्ञ के पश्चात श्री अरूण थापर जी ने ज्योति प्रज्जवलित की। श्री रमाकान्त महाजन तथा श्री सुरेन्द्र टंडन ने उनका स्वागत किया। ये दोनों बड़े कर्मठ कार्यकर्ता हैं तथा आर्य समाज की सेवा में संलग्न रहते हैं। लुधियाना गुरूकुल की प्राचार्या श्रीमती सतीशा तलवाड़ तथा श्रीमती सरला भारद्वाज जी का फूलमालाओं के द्वारा स्वागत किया गया। दूसरी श्रृंखला में सुन्दर भजनों का आरम्भ हुआ। अनु गुप्ता, बोबी शर्मा, तथा रमेश महाजन ने अपने सुमधुर प्रभु भक्ति तथा महर्षि दयानन्द के भजनों के द्वारा सभी आए हुए श्रोतागणों को आनन्दित किया। भजनों के पश्चात अनेक पुरस्कारों से सम्मानित श्रीमती सरला भारद्वाज जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने मकर संक्रान्ति पर प्रकाश ड़ालते हुए लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि पर्व हमारे अन्दर उत्साह तथा उमंग भर देते हैं, अच्छा करने की प्रवृत्ति जगाते हैं, हमारी आत्मा को ऊंचा उठाते हैं जिससे मानव जीवन सार्थक होता है। दया से धर्म तथा धर्म से मानव जीवन सार्थक होता है। लुधियाना गुरूकुल से पधारी सतीशा तलवाड़ जी ने भी अपनी मंगल कामना दी। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना इन्द्रा शर्मा जी ने सभी विद्वानों का धन्यवाद किया। मन्त्राणी जनक आर्या ने कहा कि आप सभी बहनों, भाईयों के सहयोग से ही यह सब कार्य हो पाया है। इस अवसर पर बहुत से गणमान्य भाई बहनों ने भाग लिया। सर्वश्री विजय सरीन जी, आत्म प्रकाश जी, श्रवण बत्रा जी आदि आए। संजीव चड्ढा, सुरेन्द्र टंडन, सुमित, रमाकान्त महाजन ने मिलकर जलपान का प्रबन्ध किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

स्त्री आर्य समाज की गतिविधियां-: स्त्री आर्य समाज के द्वारा पिछले 20 वर्षों से प्रति रविवार को सिविल लाईन में घरों में यज्ञ, भजन सत्संग होता है। वेद मन्त्रों की व्याख्या की जाती है। इस सत्संग का सारा प्रबन्ध खुराना साहब करते हैं। श्री राजेश खन्ना का जी अन्य सभी का सहयोग रहता है। इन्द्रा शर्मा जी, जनक आर्या, किरन कपिला आदि महिला समाज सदा गुरूकुल करतारपुर या अन्य गुरूकुलों की यथाशक्ति सहायता करती हैं। स्त्री आर्य समाज बीमार, असमर्थ व जरूरतमंद लोगों की सेवा में हमेशा अग्रणी रहता है। प्रत्येक सप्ताह सभी बहनें बड़ी श्रद्धा से आर्य समाज में आती हैं और यज्ञ सत्संग में भाग लेती हैं। 12 फरवरी को टंकारा यात्रा जा रही है, उसमें भी सहयोग दिया जाता है।

-जनक रानी आर्या मन्त्राणी आर्य समाज

"जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्य समाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है आगे भी होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जन मिलकर प्रीति से करें इसलिए जैसा 'आर्य समाज' आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसे दूसरा नहीं हो सकता।"

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

'मकर संक्रान्ति पर्व मनाया आर्य समाज मन्दिर (गुरुकुल विभाग)

फिरोज़पुर शहर में लोहड़ी पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। आर्य समाज के पुरोहित पंडित सुनील शास्त्री जी ने वैदिक पद्धति के साथ यज्ञ करवाया। यज्ञ में यजमान पद पर आर्य समाज मन्दिर के प्रधान श्री नरेश मल्होत्रा उनकी धर्म पत्नी श्री मति किरण मल्होत्रा सुशोभित हुये। दोनों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया। पंडित सुनील शास्त्री जी ने लोहड़ी पर्व को मनाने के तरीके बताये उन्होंने कहा हमें इस पवित्र त्यौहार को पूरी श्रद्धापूर्वक मनाना चाहिये। हमें शराब का सेवन करके, जीव जन्तुओं को मार कर उनको शौक से खाकर लोहड़ी नहीं मनानी चाहिये। हमें उनकी तरफ भी देखना चाहिये जो रात को भूखे सोते हैं हमें उनको देखना होगा जिनके तन पर कपड़ा नहीं इन सभी जरूरतमंदों की ओर देखना होगा। आगे उन्हें कहा कि नारि जाति का सम्मान करना चाहिये, हमें भ्रूण हत्या को अपने देश में रोकना होगा, हमें लोहड़ी कन्याओं की भी मनानी होगी। तभी देश का विकास होगा, परिवार का विकास होगा। जिस परिवार में कन्या का जन्म दिवस, कन्या की शादी के बाद लोहड़ी पर्व मनाया जाता है उस परिवार में ईश्वर वास करते है।

आर्य समाज मन्दिर में कन्याओं को बुलाया गया जो कि गरीब परिवार से सम्बन्ध रखती थी उन्हें पढ़ाई सम्बन्धी सामग्री दी गई। तथा खाने का सामान भी दिया गया। कन्याओं ने लोहड़ी पर्व के गीत भी सुनाये। सभी को प्रसाद मूंगफली, रेवड़ी का बांटा गया। मुख्य आने वाले सदस्यों में से डा. मारकन अपनी पत्नी सहित, डॉ. विनोद मेहता, मंगत राम चौधरी, शान्ति भूषण शर्मा जी, अशीश मल्होत्रा, अशीश पंडित जी, श्रीमति भाटिया तथा छोटे-छोटे बच्चों ने इस महायज्ञ में भाग लिया।

-विपन धवन

बसन्त पंचमी का पर्व मनाया गया

डी. ए. एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वूमैन नवांशहर में बसन्त पंचमी एवं वीर हकीकत राय का बलिदान दिवस मनाया गया। हवन यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम को आरम्भ किया गया। पंडित अमित कुमार शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा बसन्त पंचमी के पर्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पर्व सम्पूर्ण प्राणी मात्र के लिए उमंग और उत्साह लेकर आता है। बसन्त के आने पर क्या पशु, क्या पक्षी, क्या मनुष्य सभी का हृदय आनन्द से उद्वेलित होने लगता है। कॉलेज की छात्राओं ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा कॉलेज प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि बसन्त पंचमी का पर्व हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। यह पर्व हमें प्रकृति के साथ जुड़ने का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि जहां यह पर्व ऋतु परिवर्तन की दृष्टि से अपना महत्त्व रखता है वहीं हमें धर्म के लिए अपना बलिदान देने वाले वीर हकीकत राय की याद भी दिलाता है। उस वीर बालक को प्रणाम करना चाहिए जिसने धर्म के लिए अपना बलिदान देना स्वीकार किया था परन्तु अपने धर्म का त्याग नहीं किया था। श्री विनोद भारद्वाज जी ने आगे कहा कि बसन्त पंचमी के पर्व से तथा वीर हकीकत राय के जीवन से प्रेरणा लेकर हम भी अपने जीवन में परिवर्तन करें। जिस प्रकार बसन्त आने पर प्रकृति चारों ओर से महकने लगती है। उसी प्रकार हमारे जीवन में भी सद्गुण, सद्विचार आएं। यही इस पर्व का स्वरूप है। इस अवसर पर कालेज का स्टाफ, आर्य समाज नवांशहर के सभी सदस्यगण तथा कॉलेज की छात्राएं उपस्थित थी। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर लगाया गया।

-विनोद भारद्वाज प्रधान कॉलेज प्रबन्धकर्तृ सभा

thearyasamaj.org

वेदवाणी

हे परमेश्वर! मुझे सर्वदा अभय बना दो

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्।
जेता शत्रून् विचर्षणिः।।

–ऋ० २।४१। १२; अथर्व० २०। ५७। २०

ऋषिः–गृत्समदः।। देवता–इन्द्रः।। छन्दः–निचृद्गायत्री।।

विनय–मैं डरता क्यों हूँ ? परमेश्वर (इन्द्र) की इस सृष्टि में रहते हुए तो किसी भी काल में, किसी भी देश में भय का कुछ भी कारण नहीं है। क्या मैं अपने शत्रुओं से डरता हूँ ? मेरा तो इस इन्द्र की सृष्टि में कोई शत्रु नहीं होना चाहिए। मेरा कोई शत्रु है ही नहीं। हाँ, एक अर्थ में पाप करने वाले मनुष्यों को शत्रु कहा जा सकता है, क्योंकि पाप करना परमात्मा से शत्रुता करना है–पाप करना ईश्वरीय शासन के प्रति विद्रोह करना है, परन्तु ऐसे पाप करने वाले भाई से भी मुझे डरने की क्या आवश्यकता है ? यह ठीक है कि ऐसे पाप करने वाले भाई तब मुझे अपना शत्रु समझ लेंगे जब कभी उनके पाप का विरोध करना मेरा कर्त्तव्य हो जाएगा और तब वे मुझे अपना शत्रु मानकर नाना प्रकार से सताने–कष्ट देने–को भी उद्यत होंगे, परन्तु उस पापी भाई के सताने से भी मेरा क्या बिगड़ेगा ? वह तो बेचारा स्वयं परमात्मदेव का मारा हुआ है। परमात्मा तो स्वभावतः 'शत्रून् जेता' है। उससे शत्रुता करके, अर्थात् पाप करके कौन बचा रह सकता है ? यदि यह विश्वास पक्का हो जाए कि परमात्मा 'शत्रून् जेता' है तो अज्ञानी, पापी पुरुषों की ओर से आये हुए बड़े-से-बड़े सन्तापों का, घोर-से-घोर अत्याचारों का भी भय हट जाए। ऐसा विचार थोड़ी देर के लिए आने पर ही एकदम निर्भयता आ जाती है और फिर उसे सचमुच 'विचर्षणि' समझ लेने पर तो कोई भय रहता ही नहीं। देखो, वह 'विचर्षणि' परमेश्वर सब प्राणियों के सब कर्मों को ठीक-ठीक देखता हुआ पाप और पुण्य का फल दे रहा है। वह ठीक ढङ्ग से ठीक समय प्रत्येक पाप का विनाश कर रहा है–पाप को परास्त कर रहा है। तब मुझे डरने की क्या आवश्यकता है ? मुझे तो कोई दुःख-क्लेश तभी मिलेगा जब मेरा ही कोई पापकर्म उदय होगा, नहीं तो किसी अन्य मनुष्य की चाहना से मुझे क्लेश कभी नहीं हो सकता और यदि मेरे अपने ही पाप-कर्मों के कारण कोई क्लेश आता है तो वह तो आना ही चाहिए। उसे मैं प्रसन्नता से सह-सहकर निष्पाप और अनृण होता जाऊँगा। वह क्लेश उस 'शत्रु' का भेजा हुआ नहीं है, किन्तु मेरे प्यारे परमेश्वर का भेजा है, उसका तो मुझे स्वागत करना चाहिए। एवं, इस संसार में–चारों दिशाओं में, मेरा अब कोई दुःख दे सकने वाला शत्रु नहीं रहा है। जब से प्रभु को 'विचर्षणि' और 'शत्रून् जेता' जान लिया है, तब से मैं अभय हो गया हूँ–सब ओर से अभय हो गया हूँ–किसी दिशा से कोई भय नहीं। अभय, अभय, अभय!

मकर संक्रान्ति पर्व मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में मकर संक्रान्ति का पर्व 14.1.15 को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस पर्व का शुभारम्भ मंगल यज्ञ से हुआ। स्कूल के समस्त स्टाफ ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ किया। यज्ञ के पश्चात् अध्यापकों ने बड़े सुन्दर-सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। अन्त में प्रिंसीपल ने सभी का धन्यवाद किया और बताया कि यज्ञ हमारी सभी पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान कर सकता है। अतः हमें यज्ञ की प्रत्येक प्रक्रिया को अच्छी तरह जानकर एवं श्रद्धा से करना चाहिए। अन्त में शान्ति-पाठ के पश्चात् यज्ञशेष बांटा गया।

–सुनीता मलिक

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।